3

POLIOMYELITIS

पोलियो
शिशु संबंधी पक्षाघात
(बाल-पक्षाघात)
पोलियोमैलिटिस

01614
1614

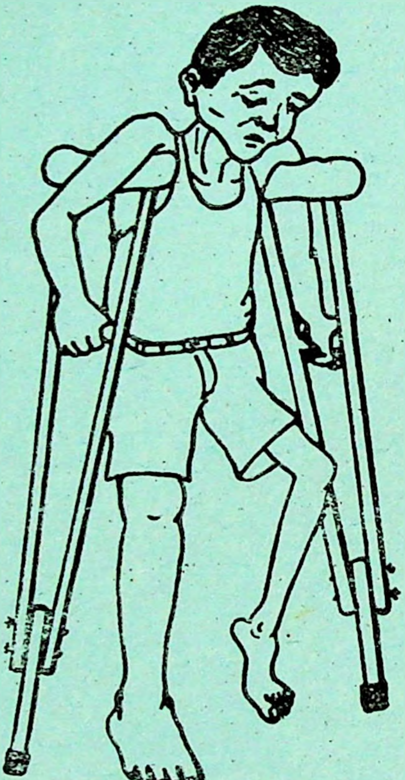

पोलियोमायलिटिस क्या है।

पोलियो एक खतरनाक छूत का रोग तथा दीर्घकालीन वायरल संक्रमण है जो दो वर्ष से कम उम्र के बच्चों में सर्वाधिक होता है। इसलिए इसका नाम बाल-पक्षाघात भी है।

पोलियो वायरल संक्रमण की जटिलता से होता है जो सामान्यतः भोजन-नली और आंतों के रास्ते को बंद कर देता है।

इस रोग के वायरस शरीर में निम्न प्रकार से घुसते हैं :

1. रोगी व्यक्ति द्वारा किये गये भोजन व पानी द्वारा;
2. पोलियोग्रस्त व्यक्ति के गले व नाक के उत्सर्जित मैल द्वारा।

जब वायरस शरीर में घुसते हैं तब निम्न बातें हो सकती हैं :

अ) ये पेट में नष्ट हो सकते हैं;
ब) बिना बाह्य लक्षणों के ये पेट में रह सकते हैं;
स) ये अपनी वृद्धि करके मस्तिष्क और रीड़ की हड्डी में आक्रमण कर सकते हैं; यह एक प्रतिशत से कम रोग ग्रस्त बच्चों में होता है।

मांसपेशियों का दर्द, इन्जेक्शनों से होने वाला नसों के छोरों का नुकसान और टॉसिल्स के रोग के कारण इन वायरसों को नाड़ी-तंत्र पर आक्रमण करने का अवस मिलता है।

01614
COMH-32
COMMUNITY HEALTH CELL
326. V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

अधिकांश बच्चे छोटी उम्र में ही निम्न कारणों से इस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं :

1. खराब उपचार
2. अत्यधिक भीड़ वाले क्षेत्र
3. कुपोषण के कारण रोग से लड़ने की शक्ति कम होना।

ऊपरी कारणों की वज़ह से पोलियो प्रमुख रुप से गरीब परिवारों के बच्चों में होता है। निम्न-पिछड़ी जातियों में पोलियो अपंगता का सर्वाधिक प्रमुख कारण बनता है।

गरीबी के भार से दबे परिवार में पोलियोग्रस्त बच्चा एक बड़ा भारी बोझ बनता है। ऐसी अपंगता परिवार के धैर्य को तोड़ती है और अत्यधिक परेशानी का कारण बनती है।

जब जीवन-स्तर सुधरता है तब पोलियो का संक्रमण कम होता है तथा यह आगे चलकर बुढ़ापे में हो सकता है।

"साधारण बीमारी"

पोलियो वायरस का संक्रमण बहुत हल्की, सामान्य प्रतिक्रिया देता है जो कि एक "साधारण बीमारी" की अवस्था मानी जाती है।

वायरस का संक्रमण एक सामान्य जुकाम के रुप में शुरु होता है जिसमें नाक बहती है, हल्का बुखार, सिर दर्द, हल्का बीमार महसूसना, पीड़ायुक्त गला व मांसपेशियां तथा पेट की आंतों में खराबी जैसे उल्टी (कै) आना, दस्त लगना आदि शिकायत कुछ दिनों तक होती हैं।

यह स्थिति फ्लू जैसे वायरस संक्रमणों से अलग नहीं की जा सकती।

कभी-कभी पोलियो इन स्थितियों से "साधारण बीमारी" की सही प्रकृति की जानकारी के बिना आगे भी नहीं जाता।

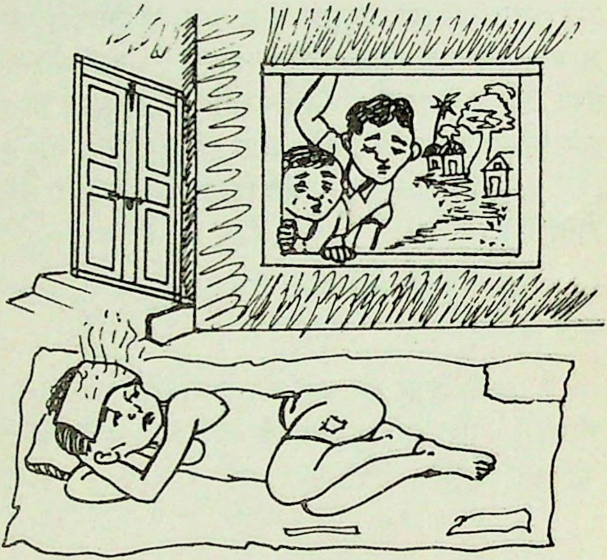

"प्रमुख बीमारी"

कभी-कभी "साधारण बीमारी" "प्रमुख बीमारी" में बदल जाती है।

होना यह है कि बार-बार आने वाला बुखार और सिर-दर्द इस समय अधिक पीड़ादायक हो जाता है तथा अन्य लक्षण तीव्र हो जाते हैं। गर्दन में कठोरता आ सकती है जिससे यह पता चलता है कि वायरस का प्रभाव मस्तिष्क की झिल्ली पर हो चुका है।

जैसे ही बुखार कम होता है, पक्षाघात दिखाई देने लगता है। लेकिन पक्षाघात से पहले प्रभावित मांसपेशियों में कमजोरी तथा दर्द होता है।

अधिकतर हाथों की अपेक्षा एक या दोनों पैर इससे प्रभावित होते हैं। कभी-कभी कुछ रोगियों की छाती की मांसपेशियां भी प्रभावित होती हैं जिससे निगलने, सांस लेने और बात करने में भी कठिनाई होती है।

पक्षाघात 24 घंटों के भीतर ही पूरी तरह फैल जाता है।

इस प्रकार के पक्षाघात में इन्द्रियां नष्ट नहीं होती और इसके परिणामस्वरूप प्रभावित मांसपेशियां ढीली होकर लटक जाती हैं।

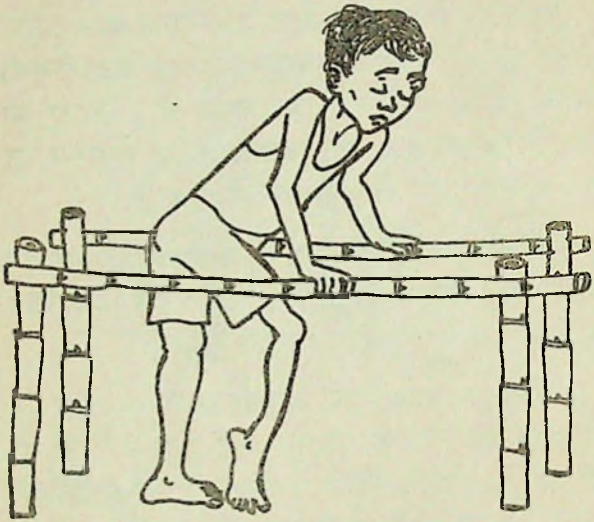

कुछ स्थितियों में पक्षाघात स्थाई नहीं होता और बालक ठीक हो सकता है। लेकिन नियमानुसार, रोगी में कुछ खास कमजोरी या मांसपेशियों का पक्षाघात होता है जिससे शरीर में खिचाव व कुरूपता आ जाती है।

यदि मांसपेशियों का रोज उपयोग न हो तो उनका कोई कार्य नहीं रह जाता और वे पतली हो जाती हैं जिससे हड्डियों के विकास में रुकावट आ जाती है। इस कारण हाथ-पैर छोटे हो जाते हैं।

एक शक्तिशाली मांसपेशी कमजोर मांसपेशी को खींचने के कारण कुरूपता आ जाती है। हड्डियों के जोड़ चपटे हो जाते हैं और प्रयोग में न लाने के कारण वे अपनी जगह से सरक भी जा सकते हैं।

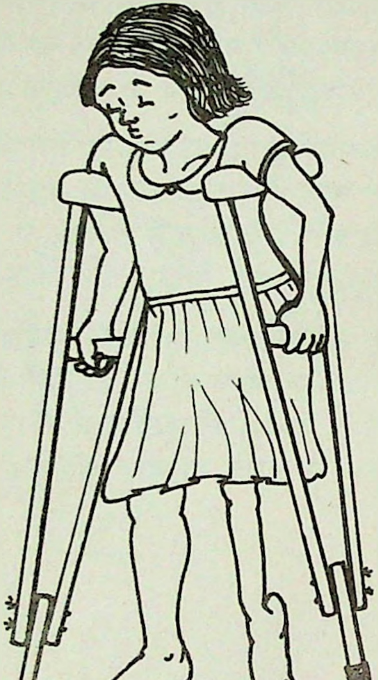

पोलियो के कारण कुरुपता

कमजोर या पक्षाघाती मांसपेशी के कारण खराब स्थिति होने से पैर को मोड़कर रखा जा सकता है। इससे कूल्हे, घुटने व एड़ी के जोड़ों में कुरुपता आ जाती है।

पैर के छोटे होने के कारण कूल्हे एक ओर झुक जाते हैं जिसका प्रभाव रीढ़ की हड्डी के समायोजन पर भी पड़ता है। इससे रीढ़ की हड्डी मुड़ जाती है जिसके कारण यह अंग्रेजी के S के आकार-सी दिखाई देती है। इसे स्कोलियोसिस (Scoliosis) या मेरुदण्ड वक्रता कहा जाता है।

असमानता के कारण एक ही जोड़ पर पूरा भार पड़ने और पूरे शरीर पर भार का वितरण समान न होने के कारण कुछ समय के बाद भार उठाने वाले जोड़ों में दर्द (प्रदाह) हो सकता है। इसके परिणाम में अच्छा पैर भी टेढ़ा हो जाता है और वह बाहर की ओर मुड़ने-घूमाने लगता है।

01614
COMH-321

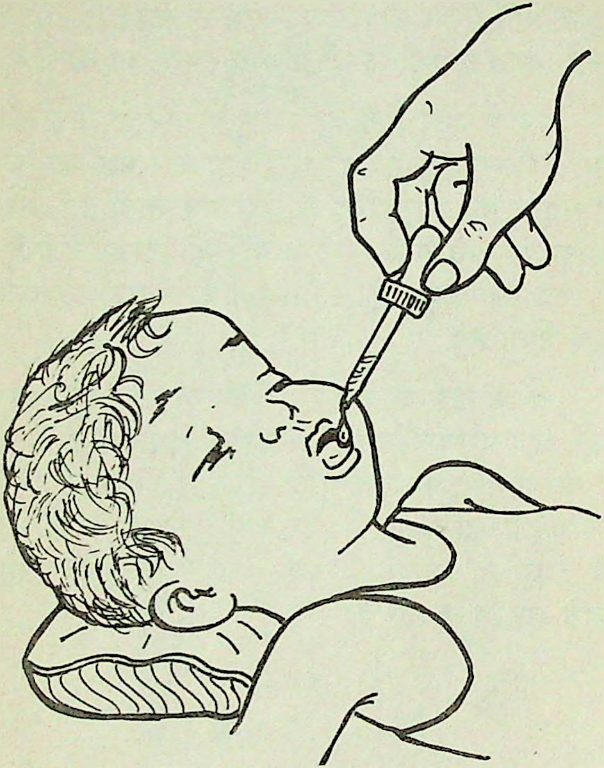

पोलियो की रोकथाम

पोलियो से बचाव का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे को टीके देकर पोलियोरहित बनाया जाए। यह ध्यान देना चाहिए कि पोलियो के सभी रोगियों को टीके लगाये गये हैं या नहीं।

रोगरहित बनाने की विधि सरल है। इसके लिए शिशु को दूसरे, तीसरे और चौथे महिने में "पोलियो की दवा" पिलायी जाती है।

(देखिए एम एम – रोगरहित बनाने की विधि)

हालांकि बीमार बच्चे को अधिक तीव्र बीमारी की अवस्था में अन्य बच्चों से अलग रखा जाना चाहिए लेकिन ऐसा करके ही किसी महारोग को फैलने से नहीं रोका जा सकता। रोगी-बालक को उठाने-बैठाने के बाद मां को अपने हाथ धो लेने चाहिए जिससे रोग के वायरस या कीटाणु हाथ द्वारा उसे या अन्य किसी को संक्रमित न कर पाएं।

बचाव के अन्य उपाय निम्न हैं : सुरक्षित पानी पियें; अच्छी तरह धोया व पकाया भोजन करें और पेशाब-टट्टी-थूक आदि को अच्छी तरह नष्ट कर दें।

जब भी मोहल्ले में किसी को पोलियो हो जाए तो इसकी सूचना स्वास्थ्य-अधिकारियों को तरंत दे देनी चाहिए।

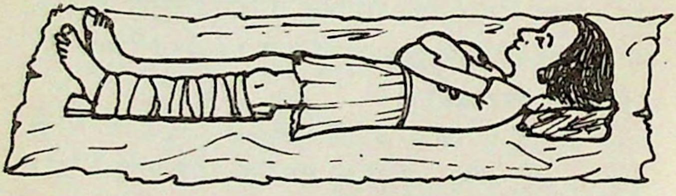

वायरस संक्रमण रोग होने के कारण इसका कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। कीटाणुनाशक दवाए इसके लिए बेकार साबित होती हैं।

पूरी तरह बिस्तर पर आराम करने की जरुरत होती है क्योंकि चलने-फिरने से पक्षाघात का खतरा और अधिक बढ़ सकता है।

बुखार और दर्द के लिए एस्प्रिन दें। दर्दीले जोड़ों और मांसपेशियों पर गर्म पानी में भीगा हुआ तौलिया रखें। घुटनों तथा हाथों के नीचे नर्म तकिये (या तह किया हुआ कपड़ा) रखें। बिस्तर पर लगातार लेटे रहने से होने वाले घावों से बचने के लिए बच्चों को कुछ घंटों के अन्तर से करवट बदलते रहें।

(देखिए एम एम - बीमारी के लिए घरेलू देखरेख)

यदि पैर कमजोर दिखाई दे तो उन्हें मुड़कर कुरूप होने से बचने के लिए उन्हें बांस या लकड़ी की खपची (टुकड़ा) के साथ बांध दें।

(देखिए एम एम – हड्डी टूटना (फ्रैक्चर)

किसी भी प्रकार का इंजेक्शन न दें क्योंकि इससे पक्षाघात में सहायता मिल सकती है।

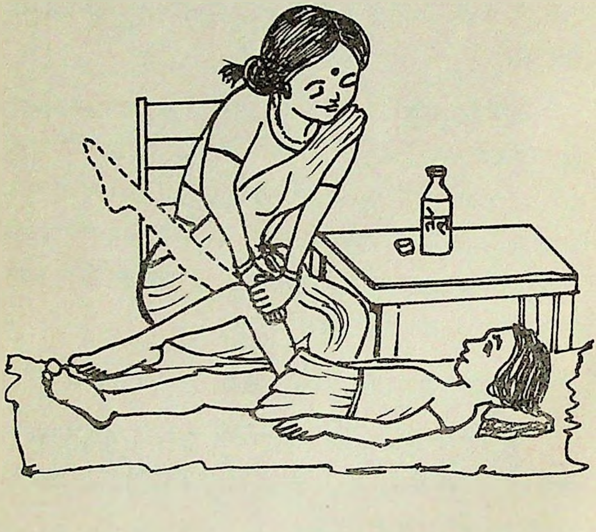
तेल

स्थाई आक्रमण के बाद पोलियो रोगी की देखभाल

पोलियो से अपंग हुए बच्चे को अच्छा पोषक भोजन देना चाहिएं और अप्रभावित मांसपेशियों को ताकतवर बनाने के लिए व्यायाम करवाना चाहिए।

रोग का जब स्थायी आक्रमण शान्त हो जाता है तब प्रभावित पैरों की हल्की कसरत करनी चाहिए और साथ ही सिकुड़े हुए अंग की सक्रिय कसरत और धीमी खिंचाई करनी चाहिए। शुरु से ही नारियल के गर्म तेल से हल्की मालिश करनी चाहिए। ऐसी विधि मां अपने बच्चे को सिखा सकती है। मोहल्ले का "हिलाट" (ज़र्रा) ("hilot") भी उपयोगी सहयोग दे सकता है।

रोगी के मुड़कर कुरुप हुए पैरों में बांस की खपची बांधी जा सकती है। कुछ बच्चों को विशेष प्रकार के जूतों की भी जरुरत हो सकती है। कुरुपता दूर करने के लिए आपरेशन की भी जरुरत हो सकती है।

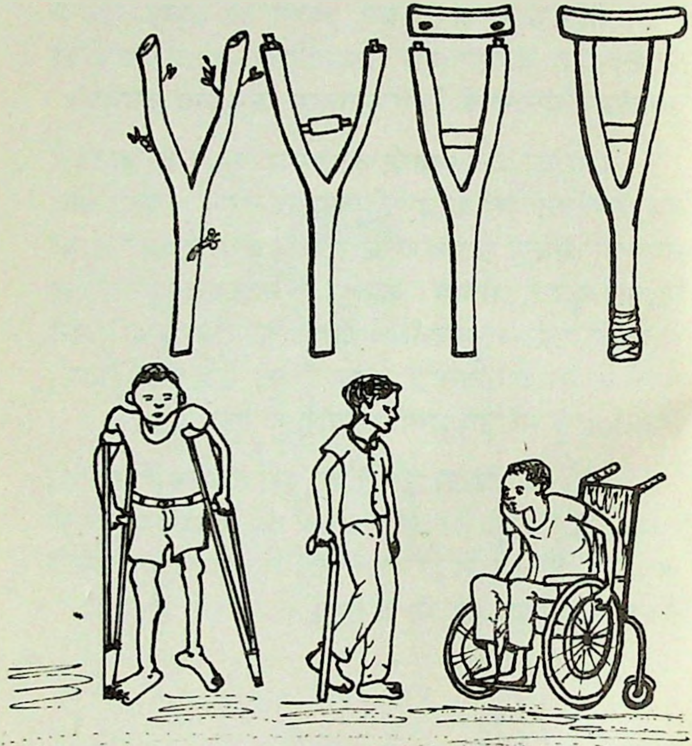

पोलियो रोगी का पुनर्वासन

शारीरिक अंपगता दूर करने की सफलता की गोपनीयता प्रोत्साहन और इच्छा-शक्ति ही है।

पोलियो रोगी को केवल लेटने या रेंगने नहीं देना चाहिए। उसे खड़े रहने और चलने के लिए उकसाना चाहिए। कुछ रोगियों को बैसाखियों, छड़ी और पहिया-कुर्सी की जरूरत हो सकती है। बैसाखी पेड़ की मजबूत शाखाओं से भी बनाई जा सकती है।

रोगी बालक को स्वयं से नहाने-धोने, भोज़न करने और पेशाब-टट्टी जाने के लिए कहना चाहिए। सभी जरूरतें बच्चे द्वारा ही पूरी करने के लिए उसकी थोड़ी-सी सहायता और प्रोत्साहन भी देना चाहिए जिससे वह अपना अधिकतर काम स्वयं कर सके।

शारीरिक रूप से अपंग व्यक्ति अपनी सभी जरूरतों के लिए पूरी तरह से दूसरों पर आश्रित होता है। रोगी बच्चे और परिवार की मानसिक स्थिति बड़ी विकट होती है। पक्षाघाती बच्चाजैसे-जैसे बड़ा होता है, उसमें खतरनाक रूप से अकेलापन व अलगाव का बोध आ जाता है। समाज में जब भी कोई ऐसे रोगी को बेकार आदमी के रूप में देखता है तब उसे अपना आश्रित और असहाय जीवन याद आ जाता है।

अपंगता मानव संसाधन के लिए व्यर्थ सिद्ध होती है क्योंकि अपंग व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से उत्पादन-कार्य में कोई सहयोग नहीं दे सकता।

पोलियोग्रस्त व्यक्ति के पुनर्वासन से उससे उत्पादन-कार्य में सहयोग प्राप्त होता है तथा उसकी अयोग्यता की हीनभावना कम हो सकती है।

पोलियो की दवा पिलाई जाती है। यदि रोगी को पेचिश या उल्टी (कै) हैं तो यह दवा नहीं देनी चाहिए।

पोलियो की दवा में तीन प्रकार के वायरस होते हैं। तीनों वायरस का समुचित प्रभाव प्राप्त करने के लिए इस दवा को एक महिने के अंतर से तीन बार देना चाहिए।

पांच वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों को पोलियो की दवा बराबर देते रहना चाहिए।

पोलियो महारोग के फैलने पर यह दवा स्कूल के बच्चों और वयस्कों को भी देनी चाहिए।

पोलियो दवा की प्रमुखता

पोलियो महारोग के समय कार्य

1. पोलियो रोगी की जानकारी अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारियों के पास दर्ज कराएं।

2. प्रमुखता के निम्न क्रम में बड़े पैमाने पर पोलियो की दवा देना शुरू करें :

अ) पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे
ब) स्कूल जाने वाले बच्चे
स) वयस्क

3. सभी तरह की दवाएं जैसे डी.पी.टी. और हर प्रकार के इंजेक्शन देना रोक दें।

4. लोगों को, विशेषकर अध्यापकों को खेल-कूद गतिविधियों तथा अन्य व्यायामों को रोक देने की सलाह दें।

5. व्यक्ति स्वयं को थकाना नहीं चाहिए; खेल-कूद, तैरना और कठोर परिश्रम करना बंद कर दें। थकान से दूर रहें।

6. पक्षाघाती रोगी को शीघ्र शारीरिक-व्यायाम विशेषज्ञ के पास ले जाएं।

प्रश्न

1. पोलियो वायरस कैसे फैलते हैं?
2. क्या पोलियो-ग्रस्त सभी बच्चे पक्षाघात से पीड़ित होते हैं?
3. किस उम्र के बच्चे पोलियो से क्यों प्रभावित होते हैं?
4. आप पोलियो की पहचान कैसे करेंगे?
5. कुरूपता के क्या कारण हैं और उससे कैसे बचा जा सकता है?
6. पोलियो को आप कैसे रोकेंगे?
7. पोलियो महारोग फैलने पर क्या करना चाहिए?

इस श्रृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003.